कविता

17

जुलाई, 2003

सम्पादक : जगन्नाथ

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष-5 | अंक-1 | जुलाई, 2003

सम्पादक : जगन्नाथ

सह सम्पादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रबन्ध : संजय कुमार

चित्रसज्जा : संगीता सिन्हा

सम्पादकीय सम्पर्क : श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

सहयोग राशि : एह अंक के : 7/-
वार्षिक : 20/-
डाक से : 25/-
आजीवन : 251/-

(सहयोग राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देय)

सम्पादन-संचालन : अवैतनिक-अव्यावसायिक

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेवार । भाव, विचार भा कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे ।

निहोरा

भोजपुरी कविता के उत्कृष्ट, मानक, सांगोपांग समकालीन सरूप के प्रस्तुति 'कविता' के मंसा बा आ भरोसा बा सिरजनहार के सर्जनात्मकता के । रउरा अप्रकाशित प्रतिनिधि गीत, गजल, कविता आ लोकराग के रचना के बेताबी से इंतजार रही 'कविता' के ।

सम्पादक के पन्ना

अइसे त, भोजपुरी में लोकशैली का गीतन के चलन शुरुए से बा, बाकिर आठ-दस बरिस पहिले आधुनिक भाव-बोध से भरल लोकशैली का गीतन के लेखन बड़ा उत्साह से शुरू भइल रहे । जनाइल जे ई उत्साह एगो आन्दोलन के शक्ल अख्तियार कर ली । 'पाती' में लोकराग के कुछ बहुते बढ़िया गीत छपल सन । ओकर यशस्वी संपादक डॉ अशोक द्विवेदी खुदे कुछ एह तरह के रचना कइलन आ अउर लोग के लिखे के प्रेरित भी कइलन । 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में भी लोकशैली के गीतन खातिर 'लोकरागिनी' नामक स्तम्भ चालू भइल, जवन कुछ अंकन के बाद बन्द हो गइल । अबहिंयो बन्दे बा । एह तरह के कुछ गीत 'कविता' आ अउरी पत्रिकन में भी छपल ह सन आ छप रहल बाड़ सन, बाकिर अब पहिलेवाला उत्साह नइखे रह गइल । अइसे त, भोजपुरी काव्य में भी छंद के प्रयोग धीरे-धीरे कम होत जा रहल बा, मगर अबहिंयो अधिकांश कवि छंद में ही लिखताड़न आ एह तरह के गीत-रचना में समर्थ कवि लोगन के संख्या भी कम नइखे । जरूरत बा एगो अभियान के तहत एह तरह के गीत-रचना में प्रवृत्त भइला के । कहे के ना होई कि लोक शैली का गीतन से भोजपुरी के अस्मिता आ एगो खास पहिचान जुड़ल बा ।

जो रचनाकार लोग से सहयोग मिलल, त कविता के अगिला अंक (अंक-18 अक्टूबर अंक) लोकशैली के गीत-विशेषांक के रूप में निकाले के तय कइल गइल बा । हर रचनाकार से एह दिसाईं सहयोग करे के हमार सादर निहोरा बा । रचना 31 अगस्त तक भी मिल जाय, त काम चली आ अंक समय पर आ पाई । रचना मौलिक आ अप्रकाशित होखे के चाहीं ।

चूँकि 'लोकगीत' हमनी के थाती ह, एह से एकरा के सहेजल हमनी के दायित्व बनत बा । लोकछन्दन के मात्रिक छन्दन में उचित परिष्कार दीहल आ लोकधुन में आज के समय-संदर्भ से जोड़िके जीवन्त रचाव मौजूदा रचनिहारन के सोझा एगो चुनौती बा, जवना से एह लोक विधा के अउर समृद्धि आ ताकत मिली । एह दिसाईं मए समरथी रचनाकारन के हम एक बेर फेरु नेवतत बानीं

www.bhojpurisahityangan.com

पी॰ चन्द्रविनोद के एगो गीत

झँझरी भइल बा पलनिया हो
छितराइल जिनगनिया !
बखरा मिलल चउवनिया हो
चार भाग रजधनिया !

अँगना का बिचहीं
देवाल बा खिंचाइल ।
नरिया से खपड़ा ले
गिन के बँटाइल ।
बँट गइले सबहर पुरनिया हो
अब रही उहाँ ननिया !

घर से बधार पर
बा फरका के मोहर ।
भउजी का अँगना-
सुनात जोरे सोहर ।
अजिया परल ओरचनिया हो
नाहीं हिलल चरनिया !

हाम-हूम लोग-बाग
बड़ी नेवताइल ।
जेकर ना बास कबो
सेहू चलि आइल ।
ढुकली ह अबगे चुहनिया हो
माड़-भात पर चटनिया !

खाए खातिर नन्हका
रहल छरिआइल ।
हाल देख माई के
करेज अईंठाइल ।
अँखिया बनल ओरिअनिया हो
बूढ़ बाप पलटनिया !

बखरा मिलल चउवनिया हो
चार भाग रजधनिया !

✪

अशोक द्विवेदी के एगो गीत

हाथे ना आवे चिरइया-समय
अस भागे हो
मोरी नीने निनाइलि अँखिया
भोरहरीले जागे हो!

बाटे कवन उदबेग
फिकिरये चँताईले हो
आहो दुखवा के धइ सिरहाना
ओठँगहूँ न पाईले हो!

छोट-छोट सुखवा-सपनवाँ क
बड़ि-बड़ि फजिहति हो
आहो मानुस बनला में अदिमी क
कतना बा दुरगति हो!

जिनिगी के जस सझुरवलीं
ऊ तस अझुराइल हो
आहो केहू तरे पवलीं मो तगवा
त सुइये हेराइल हो!

छिने-छिन लागे गरहनवाँ
अँजोरवो छिनाला हो
इहाँ साँच प भारी बा झूठ
बिनल करे जाला हो!

आई ना हमरा के कहियो
जमनवा के कल-छल हो
आहो जुझले-जोतइले में जिनगी
के लौ जरे अविरल हो!

✪

www.bhojpurisahityangan.com

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' के एगो गजल

जे मदद के नाम पर छाजन उठाई आपके
घत लगा के शख्स ऊहे घर जराई आपके

घाम, बरखा, सीत में होके निडर बढ़ते चलीं
मौत भी जे पास आई, सर झुकाई आपके

भूख पर चरचा कइल आसान बा बहुते, करीं
भूख से जब तड़फड़ाइब, तब बुझाई आपके

रउरे सोझा बा कतल अरमान के हमरा भइल
एह से अधिका अउर का दीं सफाई आपके

हम त ना जनलीं कि बँटवारा में मेंही चाल बा
हमके सावन के झड़ी, फागुन लिखाई आपके

जे करे के बा से छुटके आज कर लीं, ए हजूर
काल्ह ना 'पीयूष' फिर मोका दियाई आपके

मिथिलेश गहमरी के एगो गजल

घर के रौनक, जुगनुअन से जगमगाई ना कबो
बात मानऽ, थूक से सतुआ सनाई ना कबो

कहियो तऽ परबे करी दुरबीन से तोहरा के काम
चाह के भी आँखि से जोन्हीं गिनाई ना कबो

रंग-रोगन पोत के कतनो चमक पैदा करऽ
फूल जब कागज के बाटे, गंध आई ना कबो

आज भलहीं दूध के भावे तूँ माठा बेच लऽ
बाकी सुन लऽ, रोंवा टूटल बाँव जाई ना कबो

तूँ बहुत हलकान बाड़ऽ देखि के बिगरल समाज
लाख करबऽ नीम के जाई तिताई ना कबो

तूँ नया अंदाज में चाहे कहऽ कसहूँ गजल
शेर में बा दर्द तऽ, होई हिनाई ना कबो

www.bhojpurisahityangan.com

जितेन्द्र कुमार के एगो कविता

औरत बनि के जीअल

अखबार के चउथा पन्ना प
एगो छोटी चुकी जगह में
जवना में केहू के ध्यान जाई
चाहे ना जाई
अपना दुइ बरिस का बेटा संगे
जिनिगी से आजिज आइके
आत्महत्या के एगो खबर छपल बा
एगो औरत के

ट्रेन में अपना सहजात्री के देखवलीं
कि एगो औरत अपने त मरबे कइलस
बचवो के अपना मारि दिहलस
जीअल आसान ना रहि गइल होई

सहजात्री हमरा चिंता के
देंहि प रेंगत चिउँटा अस
झाड़ि के फेंक दिहले
अइसन-अइसन खबर कुल्हि
अखबारन में रोजे छपि रहल बड़ुये
रउआ कतना-कतना चिंता करबि

हमरा रेलजात्रा में
उदासी के रंग तारी हो गइल
आ ओह उदास रंग में
सउना गइल
भकसावन आवाज
करे के त रानी पदमावती
जौहर कइ लिहले रहली
सीता धरती से निहोरा कइलीं कि
हे धरती! अब फाटऽ
सद: रूस में अन्ना कारेनिना

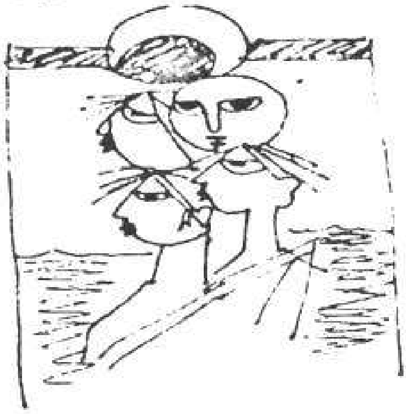

ट्रेन का सामने कूदि के
कथा के अंत कइ दिहलस
पिता से तिरस्कृत पार्वती
यज्ञ के हवन-कुंड में कूदि पड़लीं
आ ऊ आत्मघात कऽ लिहली

ललिता देवी खातिर
भीखो माँगि के जीअल
सहज ना रहि गइल होई
दुनिया के अतहत बाजार में
भीखो माँगल
एगो कला हो गइल बड़ुए
सभके भीखो ना माँगे आवे

ट्रेन से हम
ई सोचत उतरि गइलीं
कि भले हमनी के
आधुनिको से आधुनिक
होखे के दावा बा
बाकिर औरत बनिके जीअल
अबहियो सहज नइखे ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

भगवती प्रसाद द्विवेदी के एगो कविता

बाबूजी

आखिर बन्हाइए गइल बाबूजी के बोरिया-बिस्तर
आ उड़न-छू हो गइलन ऊ हरदम-हरदम खातिर
साइत एह बिराना देस से कूच कऽ गइलन ऊ अपना देस खातिर
हालाँकि आखिरी दिनन में
रहलो पर ना मिलत रहे उन्हुँकरा रहला के पता-थाह
बाकिर अब जाके बा बुझात
कि का मतलब होला बाबूजी के खाली मौजूदगी के
झगाँठ बर के शीतल छाँह के
माथ पर हाथ के छुअन के / उछाह के
आ कड़ेर घाम के चिलचिलात दुपहरिया के ताप
मूसरधार बरसात में शेषनाग-अस छत्तर तनले छाता के
होके हुलसित सहे के असह संताप सिखवले रहलन हमार बाप
जायज हक खातिर तने के / कबो-कबो नीलकंठ बनेके
खरबिरवे से छूमंतर-अस भगा देसु रोग-बियाध
हर गँवई ममिलो में जब होखे फरियाद
त चुटकी बजावत फएसला सुनावत
कऽ देसु सउँसे सुननिहारन के लाजवाब
हमरा नियर कमासुत, बहरवाँसू आ पढ़ुआ के
बूझसु ऊ 'हालऽ हालऽ बबुआ / कुरुई में ढेबुआ'
हम उड़ाईं मने-मन उन्हुका काबिलियत के खिल्ली
वाह रे शेखचिल्ली!

उन्हुकरा जाते कहाँ रहि गइलीं हम बबुआ कुरुई के ढेबुआ ?
अब आसानो कहवाँ रहि गइल बा आसान
डेगे-डेग होखेलीं हलकान
बाकिर जब कबो फरेबी-मक्कारन के करीले दरकिनार
साँच के साथ आ अनेति के प्रतिकार
तब बुझाला, बाबूजी हमरा भीतर हो गइल बाड़न साकार
जेकरा अहमियत के ताजिनिगी नकारत-नकारत
हम धनुही-अस तनि गइलीं
पता ना, अब ओही अस्तित्व के खोज-बीन करत
कब खुदे बाबूजी बनि गइलीं ?

✪

www.bhojpurisahityangan.com

अक्षय कुमार के एगो गीत

श्री श्री 108 पं॰ दीनानाथ शास्त्री वल्द स्व॰ पं॰ दीनबन्धु शास्त्री

हरमुनिया नियर बँध गइल बाड़न सात स्वर में
एह बदलत समय में
जब बदल रहल बिया परिभाषा शब्दन कऽ
जब बदल रहल बा स्वाद आ रंग चोजन कऽ
नइखन बदलत आपन जीभ, आपन आँख
आपन नीयत, आपन मान्यता
जइसे पियाज तामसिक हऽ
जइसे घीव कऽ डालडापन मउवत हऽ शरीर बदे
जइसे पीयर रंग जिनिगी कऽ ईमानदार पड़ोसी हऽ
जइसे करिया रंग यमराज बनवले हउवन
जइसे मंदिर में देवता वास करेलन
जइसे बुद्धि वृहस्पति, समृद्धि लक्ष्मी, कष्ट शनि देलन
जइसे स्वर्ग ऊपर, नर्क नीचे बा
जइसे मंत्रन कऽ अशुद्ध उच्चारण अशुभ हऽ सेहत बदे
जइसे होमल जरूरी बा आगी में असली घीव शान्ति बदे

काश! हविष्य कऽ जगहा डाल देतन
हमनी कऽ कुल्हि दुक्ख हवनकुंड में
दर्द रोज लंगी मारेला नींद कऽ घुटना पर
जहाँ भूख ढोल बजावेले पेट पर बइठि के
जहाँ रोटी एगो अबूझ पहेली बिया
जहाँ उपवास सबसे अधिक पहिनल कुर्ता बा
जहाँ कुल्हड़ क हैसियत जीएवाला लोग बाड़न
ओहिजा होम-हवन करेलन
पीठ थपथपा के पेट पर उत्सव मनावेवाला (धनपशु)
देखेलन पलटिके जगहा छोड़ला से पहिले
कहीं गिर न गइल होखे बचाऊ नीयत
जेब से अठन्नी बनिके
अपरिग्रह कऽ काँट निकाल के पाँव से
राहत महसूसत बाड़न बाजार में सड़ल काठ
श्री श्री 108 पं दीनानाथ शास्त्री वल्द स्व पं दीनबन्धु शास्त्री !

✪

www.bhojpurisahityangan.com

जगन्नाथ के एगो गीत

रिमझिम गूंजे घर-अँगनवाँ सवनवाँ में ना !
छम-छम बाज रहल बा सगरे रस-बूंदन के छागल
कन-कन में हरियर सरेह के गीत नेह के जागल
थिरक रहल मस्ती में मातल मोर मतिन मन पागल
छबि में अझुरा गइले नयनवाँ, सवनवाँ में ना

लह-लह लहँगा पहिनि बधरिया झूम रहल मतवाली
सनन-सनन-सन बीन बजावत पुरवइया खुरचाली
झलक रहल बा कादो-कनई से मेंहदी के लाली
चितवत बा, चिहाइ असमनवाँ, सवनवाँ में ना

घर में अँखिया टपक रहल अँगना चूवे ओरियानी
साँस-साँझ में बिहर रहल बिरहा के बेकल बानी
हरि बसले परदेस अनेसा में अथवत जिनगानी
किलफित में बा परल परनवाँ, सवनवाँ में ना
रिमझिम गूंजे घर-अँगनवाँ सवनवाँ में ना !

✪

मनोज कुमार सिंह 'भावुक' के एगो गजल

अब त हर वक्त संग तहरे बा
दिल के कागज प रंग तहरे बा

जे तरे मन करे, उड़ा लऽ तू
डोर तहरे, पतंग तहरे बा

तोहसे अलगा भला दहब कइसे
धार तहरे, तरंग तहरे बा

साँच पूछऽ त हमरा गजलन में
छाव तहरे बा, ढंग तहरे बा

✪

www.bhojpurisahityangan.com

रमाकान्त मुकुल के एगो कविता

आँचर के टुकड़ा

अनगिनत बेर
मन में
उठेला सवाल
कि बइठल-बइठल
जरूर सोचत होइहें भीष्म
कि कइसे फँस गइले धर्मराज
सकुनी के पास में ।

घूम जाला
एगो के बाद एगो चित्र
आ ठहर जाला आँख
जाके द्रौपदी के
साड़ी का छोर पर
जवना के
पकड़ के खींचत रहे
बरहमी से
दु:शासन के हाथ
बइठावे खातिर
निर्वस्त्र द्रौपदी के
दुर्योधन के जाँघ पर
आ डूबल रहे
पूरा-के-पूरा हस्तिनापुर
स्वार्थ में
दुहाई देत
धर्म आ वचन के ।

झुक गइल रहे
पाण्डव-दल के मूड़ी
सिया गइल रहे
सभकर ओंठ
आ सभे
चुप्पी साध के
सुनत भर रहे
नंगा होत इतिहास के
चीख आ पुकार ।

अस्त भइल जात रहे
सभ्यता के आखिरी किरिन
तसहीं उठल
एगो कटल अँगुरी
जवना में लिपटल रहे
आँचर के टुकड़ा
आ बच गइल रहे
भरतवंश के लाज ।

✪

शारदा पाण्डेय के एगो कविता

रात

का जाने
कहाँ-कहाँ से बिटोर के
छितरा देले
अपना आँचर के मनि-मानिक रात
निहारेले ओकर अँजोर
निरेखेले ओकर रूप
चाहेले कुल्ही देके
पाटि देउ सुरुज के कमी
आ बाँटि देउ एगो ठंढा उजियार
जेमें नहा लेउ सगरो संसार

✪

www.bhojpurisahityangan.com

अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' के एगो गजल

कतना दिन अइसे जिनिगी के काटल जाई
अइसे लालीपाप कब तलक चाटल जाई

धोवल-धावल चादर में बा चीर लग गइल
जो सीअल ना जाई, अउरी फाटल जाई

घर के भीतर घर बन जाई, बात ठीक बा
ना बुझात बा, दिल के कइसे बाँटल जाई

राह चलत खाई में बा गिर जाए के डर
खातरा बाटे, ना जो एके पाटल जाई

अब उतार फेंकीं लुगरी के, नया पहिन लीं
कहिया ले लुगरी में पेवन साटल जाई

खुश राखे खातिर उनका के आखिर कब तक
उनका बेसुर-ताल प मूड़ी झाँटल जाई

✪

ए० कुमार आँसू के एगो गजल

आजकल मुश्किल बहुत बा आदमी के सामने
बन गइल बा ऊ खेलौना बेबसी के सामने

चान-सूरज के इहाँ का हाल होई, जान लीं
बा अन्हरिया खाढ़ अइसन रौशनी के सामने

का लिखे, का ना लिखे आ का कहे, का ना कहे
बा इहे मुद्दा इहाँ पर शायरी के सामने

रंग सोना के आ पीतल के त होला एकही
पर इहे पहिचान होला पारखी के सामने

लाज दुलहिन के, बताईं के तरह "आँसू" बची
नाच नंगा हो रहल बा पालकी के सामने

✪

www.bhojpurisahityangan.com

शारदानन्द प्रसाद के चार गो कविता

[एक]
जबले अबर
एकजुट नइखे होखत
तबले जबर के ठेंगा
मूड़ी पर रही
बहुत मरउवत करी
त कान्ह पर धरी
जोखुआ आ कुतुआ मोल में
ढेर फरक होला ।

[दू]
मुसकियात-मुसकियात
मुँह दुखा गइल
काहें कि
ई कुकुरमुत्ता हँसी
काठे से जनमल रहे ।

[तीन]
मन अइसन भरमल बा
कंकरा के
निमन कहीं
आ
कंकरा के कहीं बाउर
कंनियो बा आग
कंनियो बा भउर ।

[चार]
ए हो सियार
ओढ़ले रहऽ
शेर के खाल
खाली
हुआँ-हुआँ
मत करिहऽ !

✪

दिनेश के एगो कविता

समय

छूटत जा रहल बा
ब्रह्मांड के पल-पल
घटत जा रहल बा
जीवन के सब काल्ह
पराया हो रहल बा
समय
अतीत बनके रोआवे खातिर
वर्त्तमान बन के सतावे खातिर
ई कवन ह गणित जीवन के ?
ना रह पावता पास
ना छोड़ पावता साथ
घात-अनाघात अस
पल-पल, छन-छन
आ रहल बा जाये खातिर
जा रहल बा आवे खातिर
वर्त्तमान बनत भविष्य
अतीत बनत वर्त्तमान
बाँसुरी बनके लुभावता
ख्याल बनके सतावता
मृदंग बनके डेरावता
जीवन के ई कवन
गणित ह भाई ?

✪

www.bhojpurisahityangan.com

अंक के खास कवि : सुरेश कांटक

प्रकृति आ सामाजिक चेतना के सजग कवि

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

समकालीन भोजपुरी साहित्य के एगो बड़हन बरिआर हस्ताक्षर आ बहुआयामी प्रतिभा के स्वामी सुरेश कांटक जी तकरीबन डेढ़ दशक से एक साथे हिन्दी-भोजपुरी में रचनात्मक स्तर प सक्रिय बाड़न । कांटक जी कई-कई गो कहानी-संग्रह, उपन्यास आ नाटकन का माध्यम से साहित्य सिरजन के अखाड़ा में आपन अथोर लेखकीय ताकत आ दक्षता के परिचय दे चुकल बाड़न । 'हाथी के दाँत', 'सरग-नरक' आ 'भाई के धन' जइसन चर्चित आ मंचित नाट्य कृतियन के साथ-साथ 'समुन्दर सुखात बा' उपन्यासो लोकप्रिय हो चुकल बा । एने कांटक जी व्यंग्य-लेखन का ओर विशेष रूप से उन्मुख बाड़न, जवना के झलक पत्रिकन में प्रकाशित उनका चोख आ धारदार व्यंग्य कवितन से मिल रहल बा आ जहाँ ले हमरा जानकारी बा, उनका निखालिस व्यंग्य कवितन के एगो अलग से संग्रह भी प्रकाशित हो चुकल बा ।

प्रस्तुत अंक के खास कवि का रूप में ऊ अपना छव गो कविता/गीत के साथे हमनी का बीच आइल बाड़न, लेकिन जवना चुभत-तल्ख व्यंग्य कवितन के लेके कांटक जी कवि-गोष्ठियन आ सम्मेलनन में चर्चित रहेलन, ऊ चीज इहाँ नइखे नजर आवत । छवो रचनन प समग्र रूप से एक साथे दृष्टिपात कइला प ई स्पष्ट हो जाता कि हरेक रचना प्रकृति आ जीवन के इर्द-गिर्द घूमत बा । पहिलका गीत- 'बेबहरा मौसम' मूलत: प्रकृतिपरक रचना बा । कवि एकरा में प्रकृति का आलंबन रूप के अलंकृत शैली में चित्रण कइले बा । एकरा अलावा- **'घुग्घू दल मनगर मस्ती में झूमत बा / नभ-गादुर के पाँव खुसी में चूमत बा / गझिन रात के जाल बिछावत बा अंबर'** आदि पंक्तियन में प्रकृति के मानवीकृत रूप के सुघर-सुभग तस्वीर देखे लायक बा । बाकिर, कवि के प्रयोगधर्मिता के प्रति जरूरत से जादा आग्रह आ कुछ क्लिष्ट-जटिल लाक्षणिकता जहाँ-तहाँ अतना हावी हो गइल बा कि कुछ पंक्ति एकदम पहेलीनुमा बनि के रह गइल बाड़ी स आ कविता के सहज संप्रेषणीयता समाप्त हो जाता । एह प्रयोग का दिसाईं अगर कवि थोरिका सहज सामान्य आ बोधगम्य रहित, त जवन बिंब ऊ खड़ा करे के चाहत रहे, ऊ खुलि के अउर साफ-साफ उभरि आइत ।

www.bhojpurisahityangan.com

ई माने के पड़ी कि कवि एह रचनन में कलापक्ष के प्रति विशेष रूप से पार्टिकुलर बा, केन्द्रित बा । **'मौसम दउरल आवत', 'आकास उदासेला', 'गझिन रात के जाल बिछावत बा अंबर'** आदि पंक्तियन में मानवीकरण के, **'गागर में बाति बहक जाले', 'चिरइन से साँस मिलाईला', 'हम बहकल के बहलाईला', 'अरुण किरिन बेमार', 'मुसुकी मारत साँझ', 'खेत के बदली अब परिधान'** लाक्षणिक प्रयोग के आ **'बेबहरा मौसम', 'कुहुँकत रंग', 'बहिन राजऋतु', 'बेबस चद्दर'** आदि में विशेषण विपर्यय के अपूर्व छटा पंत-प्रसाद के छायावादी कवितन के याद दिलावता आ कवि के कलापक्षीय रुझान के लखार करता ।

कवि मानवीय संवेदना से समृद्ध बा । अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार, गरीबी के सोझा ओकर सामाजिक दायित्व, नैतिक बोध आ युवा चेतना चुप नइखे बइठल रहत । कवि अन्याय का अन्हार के बरखिलाफ आपन बगावत के दीया जरावत बाटे- **'हर ओर अन्हरिया पसरेला, हम आपन दिया जराईला ।'** आततायी शोषक-सामंती वर्ग के प्रतीक बाज का साँप से सिहकल-डेराइल, कमजोर निरीह चिड़ियन के प्रति कवि के संवेदना के स्वर निम्न पंक्तियन में फूट पड़त बा-

'जब बाज झपट्टा मारेला/विषधर जब-जब फुफकारेला/चिरइन से साँस मिलाईला'

एही तरह 'धनिया' के पीरा आ रुदन से द्रवित कवि युवा-शक्ति आ न्यायप्रियता अउर संघर्षशीलता के प्रतीक गोबर के स्मरण करत बा । कवि के शब्दन में- **'होरी के धनिया रोवेले/रो-रो के दुखड़ा धोवेले/हम गोबर के गोहराईला ।'** धरती के दुख-दरद आ कोइल के रुँधल कंठ के स्वर से आहत कवि कलम उठावे के बाध्य हो जाता ।

अतने ना, जहाँ-जहाँ राजनैतिक, सामाजिक आ आर्थिक स्तर पर भ्रष्टता, विषमता, धांधली, बजबजात गंदगी, छल-फरेब आदि बुराइयन के घिनावन रूप दिखाई पड़त बा, कवि बिहारी लाल नियन कम शब्दन में ओह त्रासद स्थिति के असरदार ढंग से उजागर करे के प्रयास कइले बा ।

आजु सत्ता के मंडी में कतना छेंछरपन से सउदाबाजी हो रहल बा, कुरसी के खरीद-बिक्री हो रहल बा, पइसा के बाजार में मानवीय रिश्ता के नाप-तउल हो रहल बा, शकुनी नियन धूर्त, चालबाज आ फरेबी लोग अँगुरी पर गिने लायक दू-चार युधिष्ठिर- अस सत्यनिष्ठ आ ईमानदार लोगन के अनैतिक दावपेंच से हरा के, नारी अस्मिता के प्रतीक द्रौपदी के नंगा कर रहल बाड़न- एकर सांकेतिक मगर अर्थवान चित्र कवि प्रस्तुत कइले बा । एही तरह से समाज में गेरूर मारि के बइठल गरीबी के ओर भी ध्यान आकृष्ट करे के कोसिस कइल गइल बा ।

आखिर में हम कहल चाहबि कि अगर कवि प्रकृति के अपरूप सौन्दर्य का प्रति विशेष रीझल बा त अपना सामाजिक दायित्व के प्रति भी कम सजग आ संवेदनशील नइखे ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

सुरेश कांटक के छव गो गीत/कविता

[एक]

बेबहरा मौसम

कइसे खिली कली
बगियन पर पहरा बा
मौसम दउरल आवत बहुत बेबहरा बा ।

धुआँ-धुआँ फइलल
सूरज बंदी होंई
चान अँजोरिया फइलाई, कैदी होंई
उमड़त-घुमड़त आवत करिया बदरा बा ।

घुग्घू-दल मनगर
मस्ती में झूमत बा
नभ-गादुर के पाँव खुशी से चूमत बा
सूतल परल प्रहरूआ गूंगा-बहरा बा ।

गझिन रात के जाल
बिछावत बा अंबर
व्रत-उपवास मनाई इहाँ दिगंबर नर
समुझ-समुझ वन चरना, राज ई गहरा बा ।

छुप-छुप कुतर रहल
जड़ कवनो सौदागर
पछुआ झकझोरत उमड़त आवत सागर
'कांटक' गीत सुनावत शुरू ककहरा बा ।

[दू]

गीत अमन के

जब-जब आकास
उदासेला
हर रात अन्हरिया पसरेला
हम आपन दिया जराईला
हम गीत अमन के गाईला ।

जब बाज झपट्टा
मारेला
बिखधर जब-जब फुफकारेला
चिरइन से साँस मिलाईला ।

होरी के धनिया
रोवेले
रो-रो के दुखड़ा धोवेले
हम गोबर के गोहराईला ।

धरती जब पुक्का
फारेले
कुहुँकत कोइल जब हारेले
हम आपन कलम उठाईला

सागर में आगि
लहक जाले
गागर में बाति बहक जाले
हम बहकल के बहलाईला ।

जब बाघ बकरियन
के खाला
जब दूध बिलरवा पी जाला
गइयन के नीन भगाईला
हम गीत अमन के गाईला ।

www.bhojpurisahityangan.com

[तीन]

खोंता उजड़ रहल

चहकत हाट बजार
गवंला घरवा पुक्का फार
कि खोंता उजड़ रहल

चिरइन के
तन-मन बा पत्थर
चुगा भटकत खोंज में
दर-दर
रिश्ता सभ बैपार
कि खोंता उजड़ रहल ।

सउदा से
आबाद बा सत्ता
शकुनी के आबाद बा पत्ता
पांचाली उपहार
कि खोंता उजड़ रहल ।

दीवाली में
भइल दिवाला
होरी कुहुँकत रंग में आला
घर के इज्जत उघार
कि खोंता उजड़ रहल ।

'कांटक' के
सपना लिलाम बा
तामझाम में दखिन-वाम बा
अरुन किरिन बेमार
कि खोंता उजड़ रहल ।

कविता/जुलाई. 2003/14

[चार]

बंधन स्वच्छंद

फूल झरल
गंध रस गइल
गीत-भरल बंध रह गइल ।

सुगना के
बोल ना सुनाय
भँवरा कवनो ना गुनगुनाय
रचल मधुर छंद रह गइल ।

कवन तार
पुहुप दला झार
आवरन पुरान सभ उतार
कवनो ना द्वंद्व रह गइल ।

हरित रचे, पीत
करे ध्वंस
नीर-छीर के ऊ राजहंस
क्लेश ना, आनंद रह गइल ।

रोशनी,
खुलल हवा, अकास
पा गइल मिटल जनम पियास
बंधन स्वच्छंद रह गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

[पाँच]

चान चइत के

तपत तवा प
छिरकत चन्नन रात-रात भर
चान चइत के

हँसुआ हाथ
मोती माथ
झाँकत आस-हुलास
पहर पलक में टूटत रग-रग
फूले नवल कपास
रात धरम के
हँसी ठिठोली बात-बात पर
चान चइत के

मुसुकी मारत साँझ
खेत के
बदली अब परिधान
नाची सरगम नव-नव धुन प
बढ़त हाथ के मान
अमरित बरसत
हर दल हरसत हाथ-हाथ पर
चान चइत के

निरखत रूप
पियासल जइसे जनम-जनम से
चोरी-चोरी
निसबद रात थकान समेटत
अलस असुध
जब सूतल गोरी
निपट अकेले डालत जादू
गात-गात पर
चान चइत के

भोर अँजोर बढ़ावत
समरथ पपिहा पिहकत
बहिन राजऋतु
के कू-कू से सप्तम सुर में
हियरा हुलसत
सिहरन मन के उड़ि-उड़ि बइठत
पात-पात पर
चान चइत के ।

www.bhojpurisahityangan.com

[छव]

करइत

पढ़ब अबहीं
अवरू आगे
बबुआ कहलस ।

गदगद माई के मन शतदल
छाती उपवन चार कोस के
बाबू के मन टँगल ताड़ प
कुहुँकत थसकल
छोड़ होस के
तोता उपजल भीतर के ना
टीस के सहलस

छन भर में
तप गइल दुपहरी
लूक लहर बढ़ चलल देह में
बेबस चद्दर चरकल अचकें
तड़प उठल बेपरद गेह में
धह-धह सपना जरल
ना केहू आगि के थहलस

माई के मन चान
अमवसा में डूबल
बाबू के निरखत
बबुआ बीच चकोह
हाथ अरजी संग बिलखत
मथनी
लाचारी
तीनों बेहुँड़ी मथलस

आन्हीं -अन्धड़ आँखिन बदरी
उमड़त अव्वल अंक
तीन महासागर के
मोती टपकल
बनि के रंक
करइत कवन ना जानें चुपकें
सभके डँसलस ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

सहयोगी रचनाकार

- **अक्षय कुमार पाण्डेय/6**
  रेवतीपुर (रंजीत पाण्डेय), गाजीपुर 232328
- **अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'/9**
  ग्रा॰ पो॰ सागरपाली, बलिया 277506
- **डॉ॰ अशोक द्विवेदी/2**
  47, टैगोरनगर, सिविल लाइन्स बलिया, 277001
- **ए॰ के॰ 'आँसू'/9**
  प्रभा निकेतन, मौलाबाग, आरा-802301
- **जगन्नाथ/7**
  श्याम भवन (ललित होटल के पीछे), बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001
- **जितेन्द्र कुमार/4**
  मदनजी का हाता, पकड़ी चौक, आरा-802301
- **दिनेश/10**
  सिनहा फोनेक्स, नेहरूनगर, आरा 802301
- **पी॰ चन्द्रविनोद/2**
  न्यू एफ/11, हैदराबाद कालोनी, बी. एच. यू. परिसर, वाराणसी-221005
- **भगवती प्रसाद द्विवेदी/5**
  पो. बॉ. 115, पटना-800001
- **मनोज कुमार सिंह 'भावुक'/7**
  एवेन्जारी बेवेरेज कम्पनी लिमिटेड, पो॰ बॉ॰ 10241, कम्पाला, युगान्डा
- **मिथिलेश गहमरी/3**
  बाबूराय मुहल्ला गहमर, पोस्ट-गहमर, गाजीपुर-232327
- **रमाकान्त मुकुल/8**
  दहियावाँ, छपरा 841301
- **रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष'/3**
  शंकर भवन सिविल लाइन्स, बक्सर 802101
- **डॉ॰ (श्रीमती) शारदा पाण्डेय/8**
  142, कादम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम् प्रयाग-211006
- **शारदानन्द प्रसाद/10**
  बाबूलाल चौधरी का मकान, पश्चिमी शिवपुरी, पटना 800023
- **शिवपूजन लाल विद्यार्थी/11**
  प्रकाशपुरी, आरा 802301
- **सुरेश कांस्यकार/13**
  [illegible], [illegible], जिला-बक्सर 802112

[illegible] के विशेष अंक के प्रति उपलब्ध । हर प्रति के मूल्य 5/- रुपया ।

www.bhojpurisahityangan.com

'कविता' - प्रतिनिधि

बक्सर : रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' (शंकर भवन, सिविल लाइन्स)

आरा : जितेन्द्र कुमार (मदनजी का हाता, पकड़ी चौक)

सीवान : डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित' (जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज)

भोजपुरी के महत्त्वपूर्ण पुस्तक

सुरपंछी (गीत-संग्रह)/रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'	मूल्य 15/- रुपया
रेत के परछाँहीं (गजल-संग्रह)/ 'पीयूष'	मूल्य 21/- रुपया
थाती (लघुकथा-संग्रह)/भगवती प्रसाद द्विवेदी	मूल्य 30/- रुपया
साँच के आँच (लघु उपन्यास)/भगवती प्रसाद द्विवेदी	मूल्य 20/- रुपया
गजल के शिल्प-विधान/जगन्नाथ	मूल्य 51/- रुपया
भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा/जगन्नाथ	मूल्य 50/- रुपया
हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छन्द/जगन्नाथ	मूल्य 50/- रुपया
पाँख सतरंगी (गीत-संग्रह)/जगन्नाथ	मूल्य 25/- रुपया
लर मोतिन के (गजल-संग्रह)/जगन्नाथ	मूल्य 14/- रुपया

भोजपुरी के अन्य पुस्तक खातिर भी सम्पर्क करीं।

भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान

श्याम भवन, एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

उत्तम तथा कलात्मक कम्पोजिंग के एकमात्र केन्द्र

अनुकृति

एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1